अद्वैत वेदान्त में अनुमान प्रमाण

मो. जसीम राजा

अद्वैत वेदान्त ने अनुमान के दो भेद माने हैं। इन दोनों का स्वरूप लगभग न्याय दर्शन जैसा ही है। परार्थानुमान की प्रक्रिया में कुछ भेद है। न्याय दर्शन परार्थानुमान में पंच्यावयव वाक्यों का प्रयोग करता है जबकि वेदान्त केवल तीन वाक्यों को ही मानता है। उसके मतानुसार प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण या उदाहरण उपनय एवं निगमन, इसमें से कोई भी तीन हो सकते हैं और इन्हीं तीनों से काम चल जायेगा।

वेदान्त बौद्धिक अनुमान को परमतत्व के विषय में समर्थ न मानते हुये भी, इसका सर्वथा तिरस्कार नहीं करता है। बल्कि उसकी सीमा निर्धारित कर देता है, अन्य दार्शनिक ऐसा नहीं करते। जगत् का मिथ्यात्व, अज्ञान का अस्तित्व एवं जीव–ब्रह्म का ऐक्य भी, श्रुति समर्थित अनुमान के माध्यम से ही सिद्ध प्रतीत होता है।